एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कपास का पत्ती मरोड़ या लीफ़ कर्ल रोग

(*पुष्पेंद्र सिंह शेखावत एवं डा. प्रदीप कुमार)
कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shekhawatpushpendar@gmail.com

उत्तरी भारत में विषाणु पत्ता मरोड़ रोग कपास का एक महत्वपूर्ण रोग है । अमेरिकन कपास और अमेरिकन कपास की बी.टी. संकर किस्मों के लिए भयंकर समस्या है ।

रोगकारक एंव रोगाणु वाहक

यह रोग जैमिनी नामक विषाणु से पैदा होता है । यह यह जैमिनी विषाणु मोनोपारटाइट सिंगल स्ट्रेंडेड सरकुलर डी.एन.ए. जीनोम तथा दो सैटेलाइट डी.एन.ए. बीटा से मिलकर बना होता है। यह रोग बीज या मृदा जनित नही हैं। यह विषाणु रोगी पौधों से स्वस्थ पौंधो तक सफेद मक्खी के व्यस्कों द्वारा फैलाया जाता है।

रोग के लक्षण

इस रोग के लक्षण ऊपर की पतियों मे सबसे पहले आते है । पतियों की बारीक नसें गहरी हरी व मोटी हो जाती है रोगी पौधों की नई पत्तियों की शिराएं फूलकर उभर जाती है तथा गहरे हरे रंग की हो जाती है प्रभावित पत्ती को सूर्य के प्रकाश में सीधी देखने पर पत्ती की बारीक शिराएं/नसे उभरी हुई तथा गहरे हरे रंग की दिखाई देती है ।जैसे जैसे रोग का प्रकोप बढ़ता है, प्रभावित पत्तियों की निचली सतह पर इन शिराओं पर कप जैसे आकार की पत्तियां बन जाती हैं जिसे इनेशन कहते हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा होकर पत्तियां कठोर हो जाती है ।प्रभावित पत्तियां ऊपर या नीचे की ओर मुड़ जाती है तथा प्रभावित पौधे बौने रह जाते है जिन पर शाखाएं, फूल तथा टिण्डे कम बनते है फलस्वरूप पैदावार तथा गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

रोग का नियंत्रण

- देशी कपास व रोगरोधी संकर किस्म का प्रयोग करें।
- खेत के चारों तरफ सड़को व नहरों के दोनों ओर पीली बूटी, कांगी बूटी भांग, भाखडी आदि खरपतवारों को नष्ट करें।
- सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए कीटनाशी दवाओं का स्प्रे करें। इमिडाक्लोप्रिड 200% एस एल (0.3 मिली./लीटर पानी),थियामेथोक्सम 25% डब्ल्यूजी (0.5 ग्राम/लीटर पानी), एसिटामिप्रिड 20% एसपी (0.4 ग्राम/लीटर पानी) थियाक्लोप्रिड 240% एससी (1.0मिली./लीटर पानी), डायफेंथियुरोन, 50% WP (2.0 ग्राम/लीटर पानी), फ्लोनिकैमिड 50% डब्लूजी (0.3 ग्राम/लीटर पानी)।

लीफ कर्ल रोग के लक्षण